सत्यमेव जयते

डॉ.एस. एस. सामंत
निदेशक
Dr. S.S. Samant, DSc, FNASc, FSE
Director

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
(*Indian Council of Forestry Research & Education*)
(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्तनिकाय)
(An Autonomous Body of the Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India)
Conifer Campus, Panthaghati, Shimla-171013,H.P.

खटनोल पंचायत, उपमंडल सुन्नी के ग्रामीणों के लिए पर्यावरण सरंक्षण जागरूकता' कार्यक्रम

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा भारत की स्वतन्त्रता की 75 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में **भारत का अमृत महोत्सव** के अंतर्गत 13 अक्तूबर, 2021 को खटनोल, बसंतपुर ब्लॉक, ज़िला शिमला में ग्रामीणों के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में खटनोल पंचायत के 30 ग्रामीणों ने भाग लिया, जिसमें पंचायत प्रतिनिधि, महिला एवं युवक मण्डल के सदस्य थे।

डॉ. जगदीश सिंह,वैज्ञानिक-एफ,प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं अमृत महोत्सव के महत्व और इस कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। डॉ॰ सिंह ने संस्थान के उद्देश्य और किये जा रहे कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने आगे बताया कि युवाओं और महिलायों का पर्यावरण सरंक्षण मे महत्वपूर्ण योगदान रहता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पिछले 100 वर्षों में तापमान में औसतन 1 डिग्री की वृद्धि हुई है, जिसके फलस्वरूप पोलर बर्फ पिघल रही है और एक अनुमान के अनुसार 1979 से लेकर अब तक 20% पोलर बर्फ में कमी आई है। अतः हमारा दायित्व है कि हम बच्चों को पर्यावरण सरंक्षण पर शिक्षा दें ताकि अभी से उनके मन मस्तिष्क में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मकता विकसित हो। डॉ॰ सिंह ने जन समृद्धि वन समृद्धि योजना से संबन्धित जानकारी ग्रामीणों से साझा करी। खटनोल पंचायत के ग्रामीण हर्बल गार्डन स्थापित करने के लिए सुझाव मांगे। वैज्ञानिक द्वारा हर्बल गार्डन स्थापित करने की क्रियाविधि तथा तकनीक पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। उन्होंने बताया कि हिमालय क्षेत्र वनों का भंडार है तथा इन क्षेत्रों में उच्च कोटी के औषधीय पौधे पाये जाते हैं। खटनोल क्षेत्र में चोरा, निहानी, पत्थर चट्ट, इत्यादी जैसी जड़ी बूटियों को उगाने हेतु उपयुक्त एवं अनूकूल वातावरण है।

डॉ॰ संदीप शर्मा, वैज्ञानिक जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने वर्षा जल संचयन से संबन्धित जानकारी सांझा करी। विश्व भर में पेयजल की कमी एक संकट बनती जा रही है। इसका कारण पृथ्वी के जलस्तर का लगातार नीचे जाना भी है। उन्होंने बताया कि यह अत्यन्त आसान तकनीक है। इसके अन्तर्गत वर्षाजल को व्यर्थ बहने से रोककर इसे नालियों/पाइप लाइनों के माध्यम से इस प्रकार संग्रहित किया जाता है ताकि इसका उपयोग फिर से किया जा सके। भूजल भण्डारों में वर्षाजल के द्वारा भण्डारण बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान जलसंकट में यह न केवल जरूरी है, बल्कि बेहद सस्ता व फायदेमन्द भी है। उन्होंने यह भी बताया की चरागाह स्थानों की उत्पादकता बनाए रखने के लिए पशुओं की युक्तिपूर्णचराई कारवाई जानी चाहिए।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा ग्रामीणों को हर्बल गार्डन हेतु 250 चोरा के पौधे वितरित किए। इसके अलावा ग्रामीणोंकी मांग पर शामलात भूमि में पौधरोपण हेतु 100 पौधे बहमी के भी वितरित किए। श्री मोहिंदर शर्मा,बी.ड़ी.सी. तथा ग्राम सुधार समिति के प्रधान श्री सुरेश शर्मा ने संस्थान को उनकी पंचायत में कार्यक्रम करवाने हेतु और महत्वपूर्ण जानकारी देने हेतु धन्यवाद दिया। डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने ग्रामीणों का कार्यक्रम में भाग लेने हेतु धन्यवाद दिया।

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां